4 पुरस्कार

रामनगर एक सुंदर शहर है। वह चारों तरफ़ से पहाड़ियों से घिरा हुआ है। रामनगर में बालक-बालिकाओं के दस विद्यालय हैं। वे आपस में मिल-जुलकर अनेक काम करते हैं। प्रत्येक वर्ष वे मिलकर पुरस्कार **वितरण** उत्सव मनाते हैं। इस उत्सव में सभी दस विद्यालय भाग लेते हैं। इस वर्ष प्रतियोगिता का विषय था-'सच्चे बच्चे कितने अच्छे।'

आज उसी प्रतियोगिता का परिणाम सुनाया जाएगा। **सर्वाधिक** अंक पाने वाले छात्र-छात्राओं को पुरस्कार भी दिए जाएँगे।

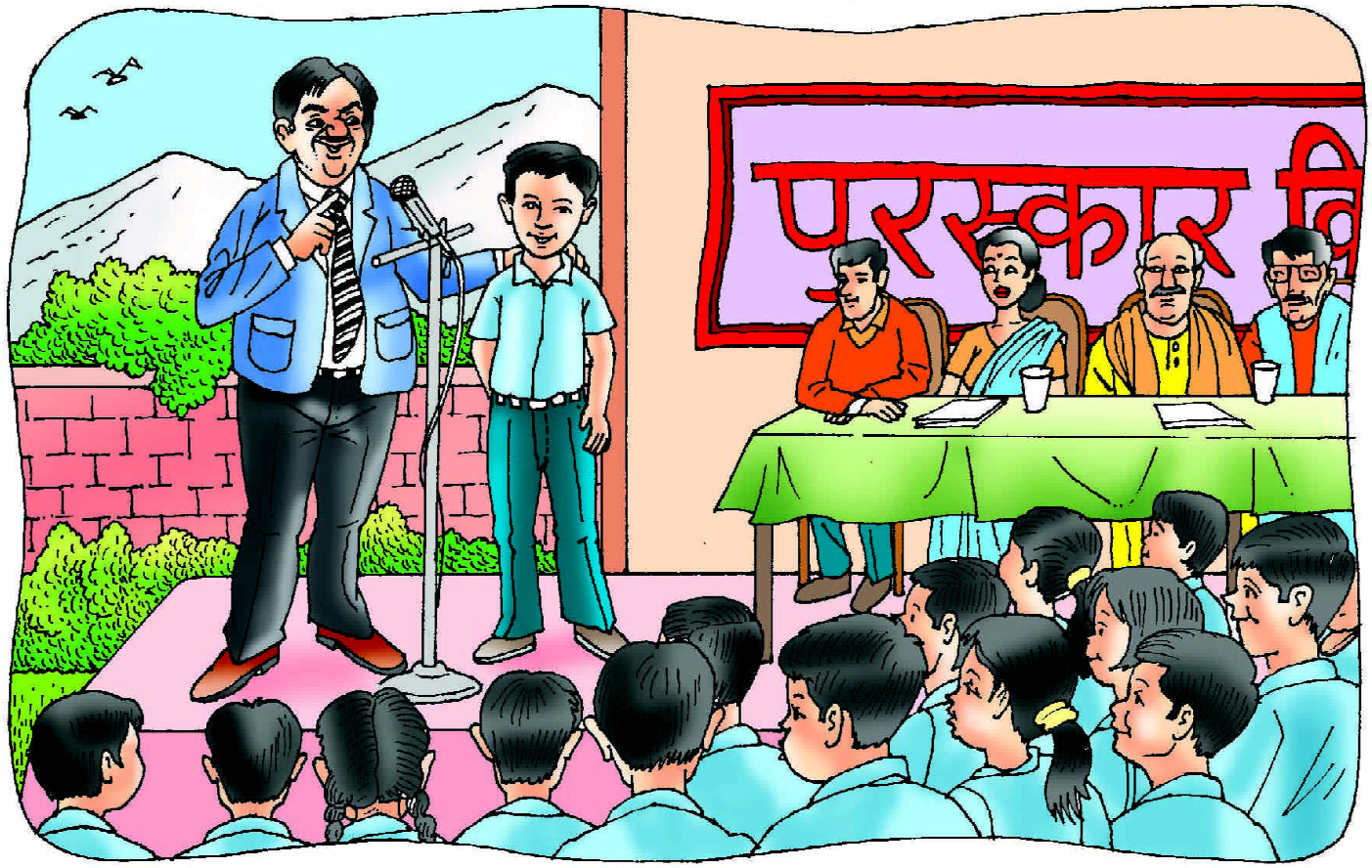

इस वर्ष प्रतियोगिता का पहला पुरस्कार विद्यालय नंबर 2 की छठी कक्षा के छात्र सत्यपाल को देने का फ़ैसला लिया गया। जलसे में हैडमास्टर साहब ने सत्यपाल की सच्चाई की घटना सुनाई।

शब्दार्थ: वितरण–बाँटना; **सर्वाधिक**–सबसे अधिक

सत्यपाल एक **निर्धन** लड़का है। उसके माता-पिता इस दुनिया में नहीं हैं। घर में एक छोटी बहन और बूढ़ी दादी हैं। कमाने वाला कोई नहीं है इसलिए सत्यपाल सुबह-शाम अख़बार बेचता है। इससे जो थोड़े-बहुत पैसे मिलते हैं उनसे घर का खर्च चलता है।

एक दिन की बात है कि रोज़ की तरह उस दिन शाम को भी वह बाज़ार में अख़बार बेच रहा था। संयोगवश उस दिन बहुत वर्षा हुई थी और सड़क पर कीचड़ हो गया था।

कुछ-कुछ बूँदें तब भी पड़ रही थीं। सत्यपाल के कपड़े भी भीग गए थे। फिर भी वह पटरी पर बैठा अख़बार बेचता रहा। पहले, कड़ी धूप में भी वह तब तक घर नहीं लौटता था जब तक सब अख़बार बिक न जाएँ। मगर उस दिन न जाने क्यों कोई अख़बार खरीदने वाला आया ही न था। जब पटरी पर बैठे-बैठे बहुत देर हो गई और एक भी ग्राहक न आया तब सत्यपाल ने घूम-घूमकर लोगों के पास पहुँच-पहुँचकर आवाज़ लगाई–

''आज का ताज़ा अख़बार लो।''

''शाम का ताज़ा समाचार लो।''

पर आज किसी को भी अख़बार पढ़ने की फ़ुर्सत नहीं थी। सब घर पहुँचने की जल्दी में थे इसलिए सत्यपाल का एक भी अख़बार नहीं बिका। उधर सूर्य भी ढल चुका था और **साँझ** का झुटपुटा और घना होता जा रहा था। यह देखकर सत्यपाल को चिंता हुई। अगर आज अख़बार न बिके तो क्या होगा? तभी उसका दूसरा साथी उधर से निकला। उसका नाम चंचल था। दोनों एक साथ अख़बार लेकर निकले थे। चंचल के सब अख़बार बिक चुके थे पर बेचारे सत्यपाल का एक भी नहीं।

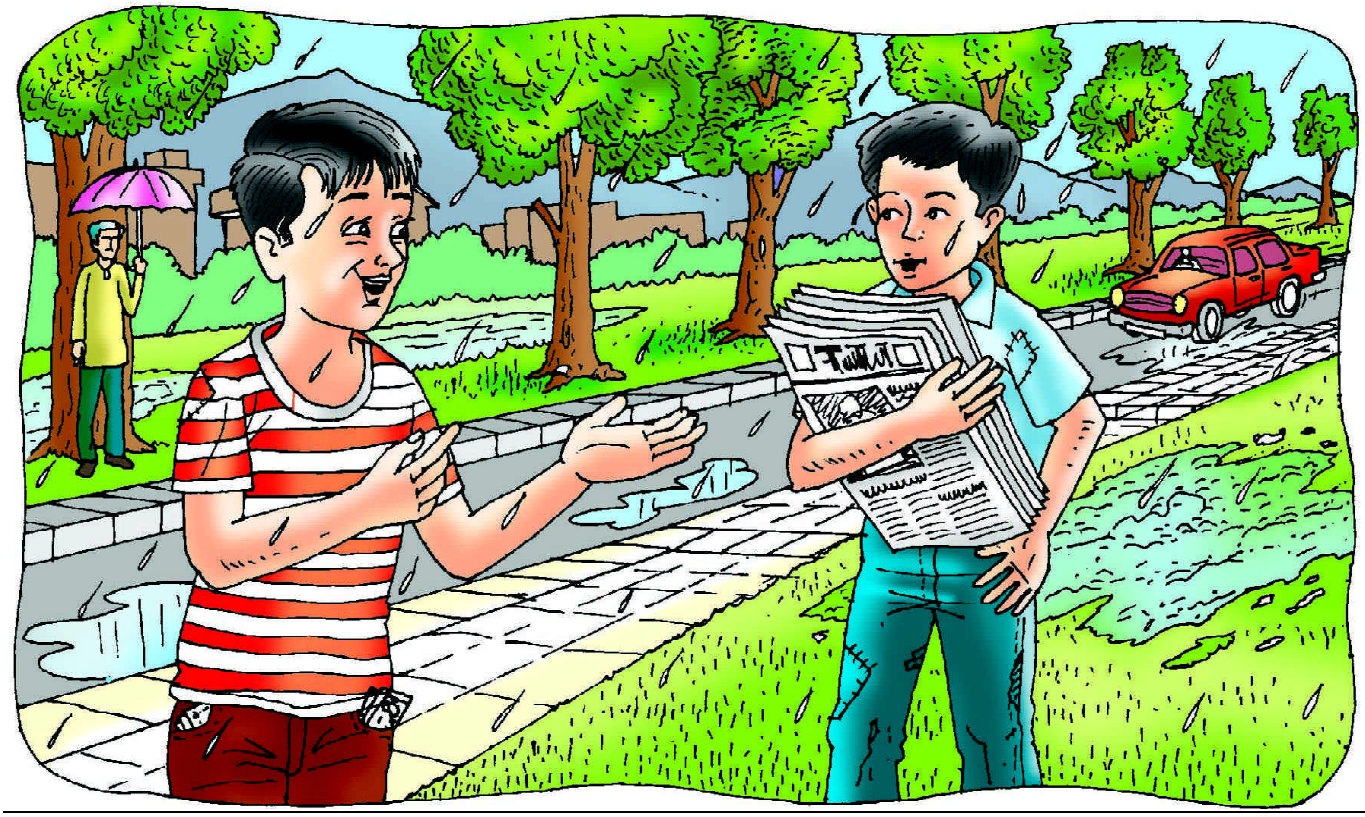

शब्दार्थ: निर्धन–गरीब; **साँझ**–शाम, संध्या

सत्यपाल ने हैरानी से उसके खाली हाथों और भरी जेब की ओर देखा। फिर कहा, ''भाई! तुम तो बहुत जल्दी निपट गए!''

चंचल बोला, ''और तुम अभी हाथ पर हाथ रखकर बैठे हो! ऐसे तो तुम्हारे अख़बार रात तक नहीं बिकेंगे।''

''तो मैं क्या करूँ?'' सत्यपाल ने हैरान होकर पूछा।

''दो-चार चटपटी ख़बरें ज़ोर-ज़ोर से दुहराओ। जैसे-बैंक में सनसनीखेज डकैती! लुटेरे रंगे हाथ पकड़े गए। फिर देखो तुम्हारे अख़बार कैसे झटपट बिकते हैं।'' चंचल ने अपनी शान दिखाते हुए कहा।

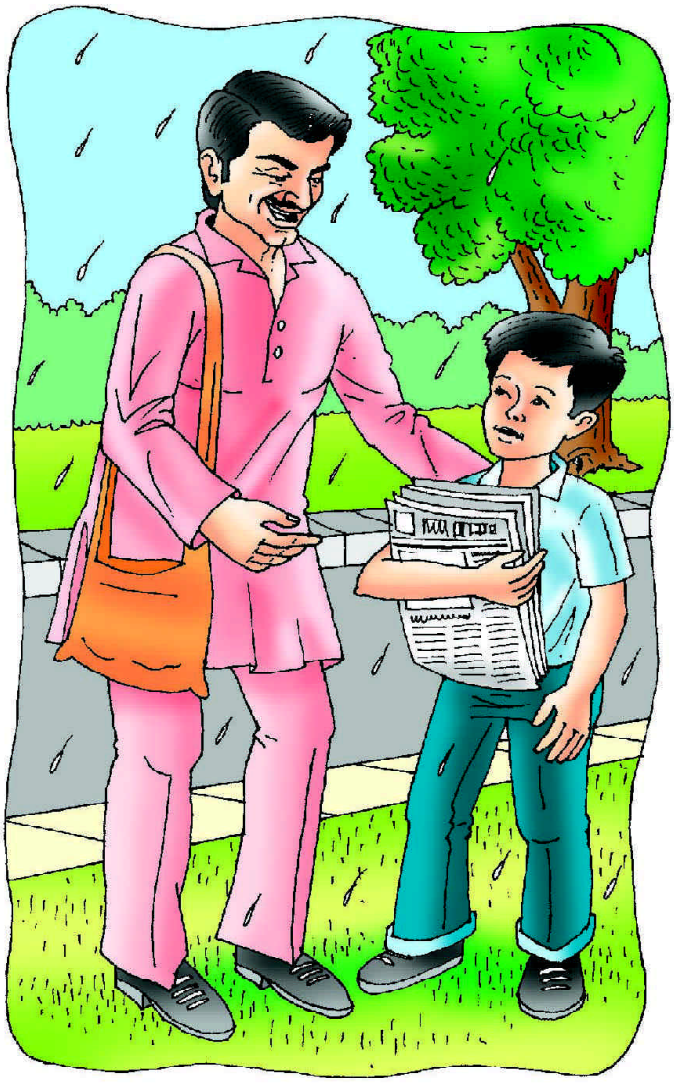

सत्यपाल ने कहा, ''पर ऐसी बड़ी कोई ख़बर तो आज अख़बार में है ही नहीं?''

चंचल बोला, ''अरे, बड़ी ख़बर नहीं है तो चोरी की छोटी-मोटी ख़बर तो है। उसे नमक-मिर्च लगाकर बड़ी ख़बर बनाना तुम्हारे अपने हाथ में है। बस, फटाफट अख़बार बेचने का यही ढंग है।''

चंचल का बताया हुआ उपाय सचमुच पक्का और **अचूक** था। इससे मिनटों में सारे अख़बार बिक सकते थे। पर उसके लिए सत्यपाल का मन न माना। वह चंचल से बोला, ''मैंने तो विद्यालय में सच के रास्ते पर चलने का **प्रण** किया है। किंतु तुम्हारा बताया उपाय तो सरासर झूठ है। झूठी ख़बरों के लिए पहले दिल से झूठी बात सोचनी पड़ती है फिर मुँह से झूठी ख़बर दुहरानी पड़ती है और अंत में हाथों से गलत ढंग से अख़बार बेचने का झूठा काम करना पड़ता है। यह गलत काम मैं कभी नहीं करूँगा।''

सत्यपाल और चंचल की सारी बातचीत को उनके एक शिक्षक सुन रहे थे। सत्यपाल की यह सच्चाई देखकर वे गद्‌गद् हो उठे। उन्होंने सत्यपाल की पीठ ठोंकी और कहा, ''शाबाश बच्चे! तुम्हारी सच्चाई से मुझे बहुत प्रसन्नता हुई है। आज के बाद तुम्हें अख़बार बेचने के लिए दौड़-धूप नहीं करनी पड़ेगी। मैं तुम्हें विद्यालय की तरफ़ से एक हज़ार रुपए मासिक छात्रवृत्ति दिलवाऊँगा।''

सत्यपाल ने विनम्र भाव से कहा, ''गुरु जी, आपकी इस कृपा के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद।''

सत्यपाल को उसकी सच्चाई के लिए प्रथम पुरस्कार मिला। सारा हॉल तालियों की गड़गड़ाहट से गूँज उठा। इस प्रकार सत्यपाल ने अपने नाम को सच कर दिखलाया।

–देवदत्त द्विवेदी

शब्दार्थः अचूक–न चूकने वाला; **प्रण**–पक्का निश्चय

अभ्यास

पाठ में से

1. रामनगर में कितने विद्यालय थे? वे प्रत्येक वर्ष मिलकर कौन-सा उत्सव मनाते थे?
2. सत्यपाल के घर में कौन-कौन था?
3. चंचल ने सत्यपाल को अख़बार बेचने का क्या उपाय बताया?
4. 'सच्चे बच्चे कितने अच्छे' प्रतियोगिता में सत्यपाल को कौन-सा पुरस्कार मिला और क्यों?
5. **पाठ के आधार पर बताइए कि नीचे दिए गए कथन किसने कहे, किससे कहे–**

कथन	किसने कहा	किससे कहा
(क) भाई! तुम तो बहुत जल्दी निपट गए।	.....	.....
(ख) दो-चार चटपटी खबरें ज़ोर-ज़ोर से दुहराओ।	.....	.....
(ग) तुम्हारी सच्चाई से मुझे बहुत प्रसन्नता हुई है।	.....	.....
(घ) मैंने तो विद्यालय में सच के रास्ते पर चलने का प्रण किया है।	.....	.....

6. **कहानी की घटनाओं को बिना किसी क्रम के नीचे दिया गया है। 'पहले क्या हुआ', 'उसके बाद क्या हुआ' के आधार पर घटनाओं को सही क्रम-संख्या दीजिए–**

- ☐ चंचल ने कहा, ''दो-चार चटपटी खबरें ज़ोर-ज़ोर से दुहराओ।''
- ☐ शिक्षक ने सत्यपाल को एक हज़ार रुपए मासिक छात्रवृत्ति दिलवाने के लिए कहा।
- ☐ सत्यपाल ने कहा, ''मैंने तो सच के रास्ते पर चलने का प्रण किया है।''
- ☐ एक बार शाम को सत्यपाल अख़बार बेच रहा था।
- ☐ शिक्षक सत्यपाल की सच्चाई से बहुत प्रसन्न हुए।
- ☐ सत्यपाल ने चंचल के खाली हाथ और भरी जेब को देखा।
- ☐ तभी उसका एक साथी चंचल उधर से निकला।
- ☐ मगर इसके लिए सत्यपाल का मन न माना।
- ☐ सत्यपाल को उसकी सच्चाई के लिए प्रथम पुरस्कार मिला।
- ☐ सत्यपाल और चंचल की सारी बातें उनके एक शिक्षक सुन रहे थे।

बातचीत के लिए

1. सत्यपाल क्या बेचता था और क्यों?
2. सत्यपाल में आपको क्या-क्या गुण नज़र आए?
3. किसी उस प्रतियोगिता के बारे में बताइए जिसमें आपको कोई पुरस्कार मिला हो?
4. यदि आपको विद्यालय में प्रतियोगिताओं के आयोजन की ज़िम्मेदारी दी जाए तो आप कौन-सी प्रतियोगिताओं का आयोजन करना पसंद करेंगे और क्यों?

अनुमान और कल्पना

1. सत्यपाल चंचल के उपाय को मान लेता तो क्या होता?
2. यदि तुम चंचल की जगह होते तो सत्यपाल को क्या सलाह देते और क्यों?

भाषा की बात

1. पाठ में आए कोई चार युग्म-शब्द छाँटकर उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए–

(क) .....

(ख) .....

(ग) .....

(घ) .....

2. पाठ में से कोई तीन-तीन अनुस्वार और अनुनासिक वाले शब्द लिखिए–

अनुस्वार वाले शब्द	**अनुनासिक वाले शब्द**
(क)	(क) .....
(ख)	(ख) .....
(ग)	(ग) .....

जीवन मूल्य

- गाँधी जी, राजा हरिशचंद्र सदा सत्य बोलते थे।
- पाठ में सत्यपाल ने भी सच्चाई का साथ दिया।

1. सत्य की सदा ही जीत होती है, विचार कीजिए।
2. हम सबको जीवन में आई कठिन परिस्थितियों में भी सदा सच बोलने का प्रण क्यों लेना चाहिए?

कुछ करने के लिए

1. **सत्यपाल को सच्चाई के लिए पुरस्कार मिला। आप बहादुरी के लिए पुरस्कार पाने वाले किन्हीं तीन बच्चों की सूची तैयार कीजिए। सूची तैयार करते समय नीचे पूछी गई जानकारी भी लिखिए–**

	नाम	प्रदेश	बहादुरी भरा कारनामा
(क)	.....	.....	....
(ख)	.....	.....	....
(ग)	.....	.....	....

2. 'सत्य की जीत' पर आधारित कोई एक कहानी पढ़िए व कक्षा में सुनाइए।

5

(केवल पढ़ने के लिए)

सीखो

सदा परिश्रम करना सीखो।
मातृभूमि हित मरना सीखो।।
कभी न दुख में डरना सीखो।
कष्ट सभी का हरना सीखो।।

अपने पथ पर बढ़ना सीखो।
गौरव-गिरि पर चढ़ना सीखो।।
अच्छी पुस्तक पढ़ना सीखो।
चरित समुज्ज्वल गढ़ना सीखो।।

मीठी बातें कहना सीखो।
हँसकर दुख-सुख सहना सीखो।।
स्नेह-सिंधु में बहना सीखो।
मेल-जोल से रहना सीखो।।

जननी की जय गाना सीखो।
जग को राह दिखाना सीखो।।
सच्चाई अपनाना सीखो।
प्रभु को शीश झुकाना सीखो।।

–विनोद चंद्र पाण्डेय 'विनोद'

शब्दार्थ: चरित–चरित्र; **समुज्ज्वल**–उजला, साफ़; **स्नेह-सिंधु**–प्रेम का सागर

6 अनोखा वरदान

विजय सिंह नाम का एक राजा था। वह अपनी प्रजा का बहुत ध्यान रखता था। एक बार वह तूफ़ानी रात में घोड़े पर सवार होकर एक तंग-से रास्ते से जा रहा था। वह **भेस** बदले हुए था। मामूली कपड़े पहनकर साधारण जनता के बीच जाकर उनके हाल-चाल का पता लगाना उसका नियम था।

एक रात राजा भेस बदलकर जा रहा था। तभी वर्षा होने लगी। कुछ ही देर में वह बिलकुल भीग गया। परंतु उसे इसकी चिंता नहीं थी। उसे अँधेरे की भी परवाह नहीं थी। वह धीमे-धीमे लेकिन सावधानी से चल रहा था। उसके घोड़े का पीछा करते हुए डाकू भी चुपके-चुपके चले जा रहे थे। डाकू राजा के शानदार घोड़े पर हाथ साफ़ करना चाहते थे।

अचानक डाकुओं ने राजा को घेर लिया। राजा एक बार तो सकते में आ गया मगर वह घबराया नहीं। वह बच निकलने की तरकीब सोच ही रहा था कि उसके घोड़े का खुर सड़क के गड्ढे में फँस गया। डाकू अभी राजा पर

शब्दार्थः भेस–रूप

लपकने ही वाले थे कि एक ओर से छह नौजवान वहाँ आ पहुँचे। उन्होंने देखा कि एक आदमी मुसीबत में है। उन्होंने डाकुओं पर हमला किया। पीछे से अचानक हमला हुआ तो डाकुओं का ध्यान बँट गया और इस प्रकार राजा बच निकला।

राजा जहाँ भी भेस बदलकर जाता था, उसके पीछे-पीछे, कुछ दूरी पर, उसके चुने हुए अंगरक्षक भी रहते थे। थोड़ी देर बाद राजा के अंगरक्षकों का दल भी आ पहुँचा। उन्होंने सभी डाकुओं को बंदी बना लिया। राजा उन नवयुवकों से बड़ा प्रसन्न था, क्योंकि बिना यह जाने कि वह राजा है, उन्होंने डाकुओं से उसकी रक्षा की थी। राजा ने उन्हें बहुत-बहुत धन्यवाद दिया और कहा कि वे उसके साथ महल तक चलें।

भोर होने पर रात की घटना का समाचार सब जगह फैल गया। सारी प्रजा खुश थी कि डाकू उनके राजा का बाल बाँका न कर सके। राज्य परिवार के लोगों, मंत्रियों, दरबारियों और सारी जनता ने नवयुवकों के साहस की प्रशंसा की।

अगले दिन दरबार में इन नौजवानों को राजा के सामने लाया गया। राजा ने अपने सिंहासन से उतरकर उन्हें गले से लगाया और मन चाहा पुरस्कार माँगने को कहा। राजा ने कहा, ''आप बारी-बारी से जो चाहे माँगो। अगर मेरे बस के बाहर न हुआ तो मैं इसी समय आपकी कोई भी इच्छा पूरी कर दूँगा।''

उन छहों में जो सबसे बड़ा था, राजा ने पहले उसी से पूछा। एक पल के लिए उसने सोचा और फिर कहा, ''महाराज बहुत दिनों से मेरी **लालसा** थी कि मेरे पास आराम से रहने के लिए एक घर हो। मुझे बस एक अच्छा-सा मकान चाहिए।''

राजा ने उसी समय उस नौजवान के लिए एक आलीशान भवन बनाने की आज्ञा दे दी।

अब दूसरे नौजवान की बारी थी। वह अपने पद में तरक्की चाहता था। राजा ने उसे राज्य दरबारी **नियुक्त** कर

शब्दार्थः लालसा–इच्छा; **नियुक्त**–लगाया हुआ

दिया और इस तरह उसकी इच्छा पूरी की।

तीसरे नवयुक ने कहा, ''सरकार! मेरे गाँव के लोग हर सप्ताह नगर में सब्ज़ी-तरकारी बेचने आते हैं। गाँव और शहर के बीच कोई अच्छी सड़क नहीं है, इसलिए उन्हें बड़ा कष्ट होता है, खासकर बरसात में। मेरी विनती है कि एक अच्छी सड़क बनवा दी जाए ताकि उनका कष्ट दूर हो।''

राजा ने उसी समय सड़क और पुलों का निर्माण कराने वाले मंत्री को हुक्म दिया कि फ़ौरन सड़क बनाने का काम शुरू कर दिया जाए।

जब चौथे नौजवान से उसकी इच्छा पूछी गई तो वह शरमाते हुए बोला, ''महाराज आप मेरे पिता समान हैं। मैं एक सुंदर पत्नी चाहता हूँ।'' राजा के **विदूषक** की एक सुंदर कन्या थी। राजा ने विदूषक से पूछा। उसने खुशी से

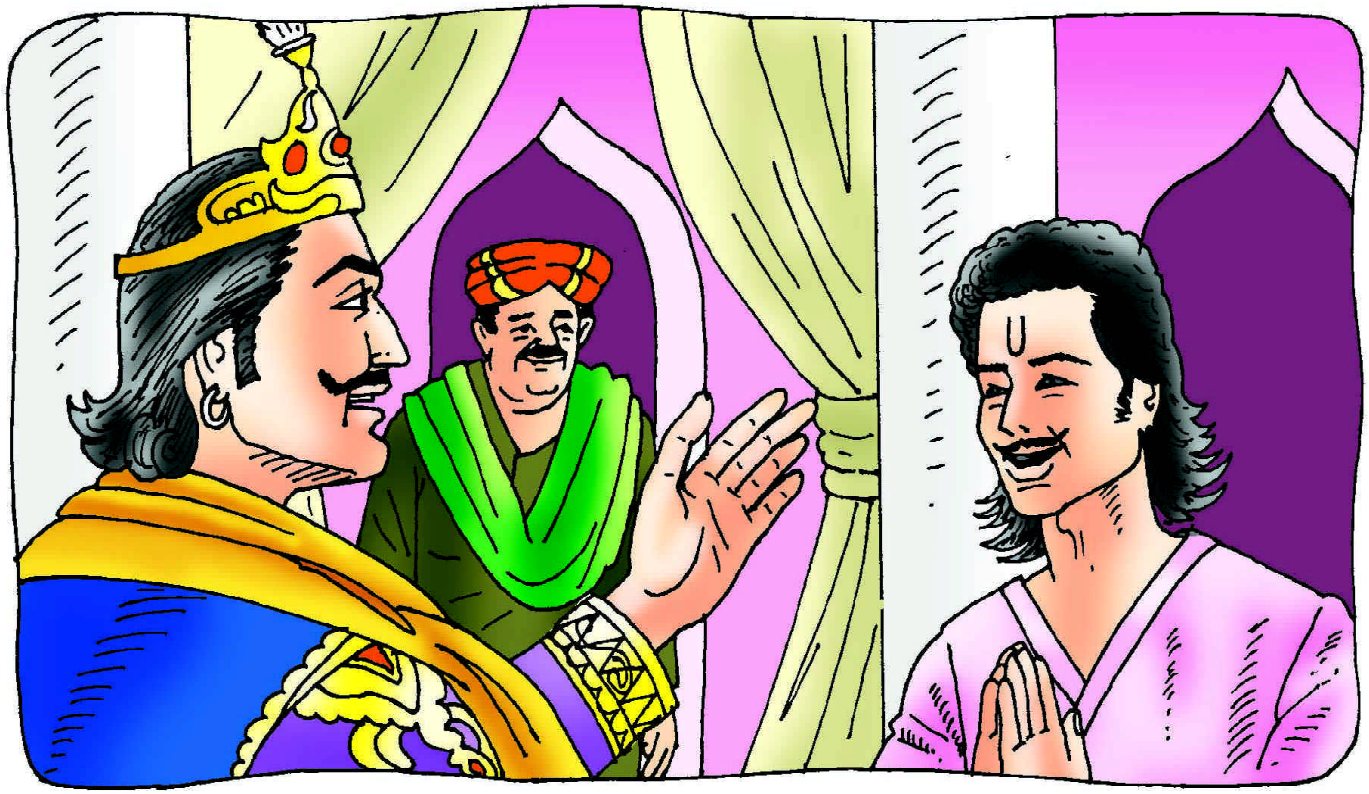

उस नौजवान को दामाद बनाना स्वीकार कर लिया।

पाँचवें नौजवान ने धन माँगा। उसी समय बोरों में सोना भरकर उसे दे दिया गया।

अब छठे की बारी थी। उसने कहा, ''महाराज। मेरी बस यही इच्छा है कि जब तक मैं और आप जीवित रहें, वर्ष में एक दिन आप मेरे यहाँ **अतिथि** बनकर आएँ।'' इस अनोखी इच्छा को सुनकर सब हैरान रह गए।

बहुत से लोगों ने तो नौजवान को मूर्ख समझा। स्वयं राजा को भी यह बात अजीब-सी लगी कि नौजवान अपने लिए कुछ माँगने के बजाए उसी को अतिथि बनाना चाहता है। लेकिन उसने तो शुरू में ही कह दिया था कि जब तक उसके वश में होगा, वह उनकी इच्छा पूरी करेगा। बस फिर क्या था। वर्ष में एक दिन और एक रात उसने उस नवयुवक का अतिथि बनना स्वीकार कर लिया।

शब्दार्थ: विदूषक–हंसी-मज़ाक द्वारा दरबारियों का मनोरंजन करने वाला, मसखरा; **अतिथि**–मेहमान

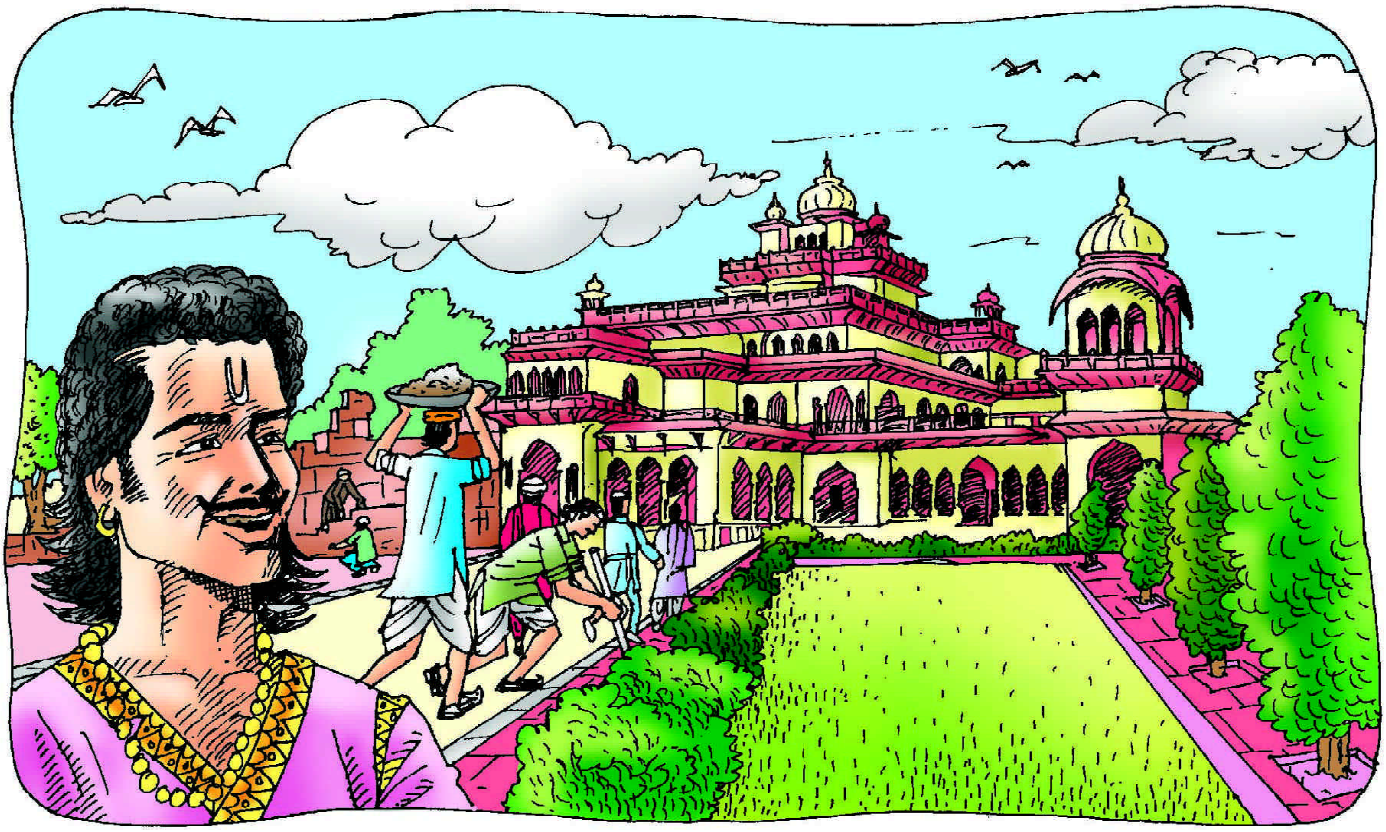

अब राज्य सरकार के विभिन्न विभागों की ज़िम्मेदारी हो गई कि राजा जब नौजवान के घर जाएँ तो उनके दौरे का ठीक-ठीक प्रबंध हो। न राजा को किसी प्रकार का कष्ट हो और न उनके सेवकों को और न घोड़ों को। बढ़िया सड़क बनाना ज़रूरी था ताकि राजा का रथ आसानी से जा सके। फिर यह प्रश्न उठा कि राजा एक छोटे-से मकान में दिन और रात कैसे काटेंगे? कहाँ उठेंगे-बैठेंगे? कहाँ खाएँगे-पिएँगे? कहाँ सोएँगे? अत: राजसी ठाठ-बाट के लायक एक महल खड़ा करवाया गया। लेकिन नौजवान अपनी मामूली-सी आमदनी में इतने बड़े महल की देख-रेख का खर्च कैसे चलाएगा? कैसे राजा और उनके संगी-साथियों की देखभाल करेगा? इसके लिए उसे बहुत सारा धन दिया गया। सरकारी खर्च पर नौकर-चाकर भी।

पुरानी चली आ रही **प्रथा** के अनुसार, राजा किसी राजदरबारी का ही अतिथि बन सकता था इसलिए उस नवयुवक को राजदरबारी की पदवी भी देनी पड़ी। अब तो उसका उतना ही सम्मान होने लगा जितना किसी राजकुमार का होता था।

अभी एक और बात बाकी थी। जिस घर में राजा अतिथि बनकर ठहरेगा उसकी **गृहिणी** को राजा के **मिज़ाज** और पसंद का पता होना चाहिए। इस बात की जानकारी राजकुमारी से अधिक और किसे हो सकती थी? शीघ्र ही नवयुवक से राजकुमारी के विवाह की तैयारियाँ की जाने लगीं।

इस तरह केवल एक वरदान माँगकर उस चतुर नौजवान ने वह सब कुछ एक साथ पा लिया, जो पाँचों ने अलग-अलग माँगा था।

–मनोज दास

शब्दार्थ: प्रथा–रीति-रिवाज़; **गृहिणी**–घर की मालकिन, गृहस्वामिनी, पत्नी; **मिज़ाज**–स्वभाव

अभ्यास

पाठ में से

1. राजा भेस बदलकर क्यों घूमता था?
2. राजा ने अपनी जान बचाने वाले नौजवानों का धन्यवाद कैसे किया?
3. तीसरे नवयुवक ने राजा से क्या माँगा?
4. छठे नौजवान ने राजा के सामने अपनी कौन-सी अनोखी इच्छा रखी?
5. **उचित शब्दों द्वारा रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए–**

   (क) राजा विजय सिंह ..... बदलकर प्रजा के हाल-चाल का पता लगाता था। (शक्ल/भेस)

   (ख) डाकू राजा के ..... पर हाथ साफ़ करना चाहते थे। (पैसों/घोड़े)

   (ग) राजा जहाँ भी जाता, उसके ..... भी उसके पीछे रहते। (अंगरक्षक/गुप्तचर)

   (घ) डाकू राजा पर लपकने ही वाले थे कि ..... नौजवान वहाँ आ पहुँचे। (सात/छह)

   (ङ) छठा नौजवान सबसे ..... था। (बुद्धिमान/मूर्ख)

6. **पाठ के आधार पर नीचे कुछ वाक्य दिए गए हैं। कहानी की घटनाओं के अनुसार उनके आगे क्रम-संख्या लिखिए–**

- ☐ प्रश्न उठा कि राजा छोटे-से मकान में कैसे रहेंगे।
- ☐ वह भेस बदलकर अपनी प्रजा का हाल-चाल पता करता था।
- ☐ राजा ने उन नौजवानों को मनचाहा पुरस्कार माँगने के लिए कहा।
- ☐ छठे नवयुवक ने अपनी चतुराई से एक वरदान से सब कुछ पा लिया।
- ☐ विजय सिंह नाम का एक राजा था।
- ☐ तीसरे नौजवान ने अच्छी सड़कें माँगी तो चौथे ने सुंदर पत्नी।
- ☐ एक बार अचानक डाकुओं ने राजा को घेर लिया।
- ☐ पहले नौजवान ने भवन माँगा तो दूसरे ने पद में तरक्की।
- ☐ छठे नौजवान ने वर्ष में एक बार राजा को अतिथि रूप में अपने घर आने के लिए कहा।
- ☐ छह नौजवानों ने राजा को डाकुओं से बचाया।

बातचीत के लिए

1. राजा के पीछे-पीछे उसके अंगरक्षक क्यों चलते थे?
2. राजा को छठे नौजवान को राजदरबारी की पदवी क्यों देनी पड़ी?
3. यदि राजा आपको कोई वरदान माँगने के लिए कहे तो आप क्या वरदान माँगोगे और क्यों?

अनुमान और कल्पना

1. यदि राजा पैदल ही जा रहे होते तो क्या होता?
2. अगर छह नौजवान राजा की रक्षा नहीं करते तो कहानी में क्या बदलाव आता?

भाषा की बात

1. पाठ में आए कोई छह क्रिया शब्द छाँटकर लिखिए–

(क) ..... (ख) ..... (ग) .....

(घ) ..... (ङ) ..... (च) .....

2. नीचे दिए गए शब्दों के विपरीत अर्थ वाले शब्द पाठ में से ढूँढकर लिखिए–

(क) रंक – ..... (ग) अस्वीकार – .....

(ख) अंदर – ..... (घ) विद्वान – .....

3. नीचे लिखे शब्दों को शब्दकोश के क्रमानुसार क्रम संख्या दीजिए–

☐ भेस	☐ अंगरक्षकों	☐ जीवित	☐ पुरस्कार
☐ स्वयं	☐ गृहिणी	☐ अतिथि	☐ शीघ्र

जीवन मूल्य

- एक ओर से छह नौजवान वहाँ आ पहुँचे। उन्होंने देखा कि एक आदमी मुसीबत में है। उन्होंने डाकुओं पर हमला किया।

  1. इन नौजवानों का मुसीबत में फँसे आदमी की मदद करना ठीक था, कैसे?
  2. मुसीबत में आए इंसानों की सहायता हम किस प्रकार कर सकते हैं?

कुछ करने के लिए

1. 'विक्रम और बेताल' की कहानियाँ पढ़िए व कोई एक रोचक कहानी कक्षा में सुनाइए।
2. कक्षा में सारे विद्यार्थी मिलकर इस कहानी का मंचन कीजिए।